



न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक निगरानी - दो/15

निग / 3143 / II / 15

श्रीमती राजनी अश्विपुत्र शर्मा एस०  
द्वारा आज दि. 17/9/15 को  
प्रस्तुत

क्लर्क ऑफ कोर्ट / 17-9-15  
राजस्व मण्डल म.प्र. ग्वालियर

गरीबा काछी तनय छिकोड़ी मृतक  
वारिसान :-

कल्लू काछी तनय स्व० गरीबा काछी  
निवासी ग्राम नरसिंहगढ़ तहसील व  
जिला छतरपुर म०प्र०

--- आवेदक

विरुद्ध

मध्यप्रदेश शासन

--- अनावेदक

निगरानी अन्तर्गत धारा 50, म०प्र० भू-राजस्व संहिता, 1959 विरुद्ध आदेश दिनांक  
16.05.2012 पारित द्वारा नजूल अधिकारी तहसील व जिला छतरपुर प्र०क०  
04/अ-20/1/2011-12 एवं 103/नजूल/2012 .

श्रीमान् न्यायालये,

आवेदक की ओर से निगरानी अन्दर अवधि निम्न प्रकार प्रस्तुत है :-

1- यह कि, आवेदक ने ग्राम नरसिंहगढ़ के खसरा भूमि न० 1266/2 एवं 1266/3  
जिसका रकवा कमशः 2.86 एवं 4.70 हैक्टेयर भूमि आवेदक के पिता श्री गरीबा काछी के  
आधिपत्य एवं स्वामित्व की भूमि थी, जो बिना सक्षम अधिकारी के बिना सूचना दिये आवेदक  
की भूमि वर्ष 2013-14 में आवेदक के पिता गरीबा काछी के नाम थी जिसका खसरा संलग्न  
है ।

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभि.के हस्ता.
18.12.15	<p>आवेदक के अभिभाषक श्रीमती रजनी वशिष्ठ शर्मा एवं शासन के पैनल लायर के तर्क सुने तथा उपलब्ध अभिलेख का अवलोकन किया गया।</p> <p>2/ आवेदक के अभिभाषक ने नजूल अधिकारी छतरपुर के प्रकरण क्रमांक 4 अ-20 (1)/2011-12 एवं क्रमांक 103/नजूल/2012 में पारित आदेश दिनांक 16-5-12 के विरुद्ध यह अभ्यावेदन प्रस्तुत किया है।</p> <p>3/ उभय पक्ष के अभिभाषकों के तर्कों पर विचार करने एवं खसरा पंचशाला ग्राम बागोता सन 1957-58 संबत 2014 की प्रमाणित प्रतिलिपि के अवलोकन से पाया गया कि भूमि सर्वे क्रमांक 1266/2 रकबा 2.06 एवं सर्वे क्रमांक 1266/3 रकबा 4.70 के खाता क्रमांक 273 के भूमिस्वामी गरीवा काछी है जो वर्ष 2021 लगायत 2024 एवं सन् 1968-69 अंकित है इसके बाद के खसरों की स्थिति क्या रही है एवं भूमिस्वामी का नाम काटकर नजूल अधिकारी छतरपुर के प्रकरण क्रमांक 4 अ-20 (1)/2011-12 एवं क्रमांक 103/नजूल/2012 में पारित आदेश दिनांक 16-5-12 किस आधार पर भूमि शासकीय नजूल</p>	

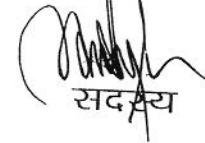
*for*

*[Signature]*

वाह्य दर्ज की है, स्पष्ट नहीं है। किसी भी भूमिस्वामी की भूमि को शासकीय दर्ज करने के पूर्व उसे सुना जाना तथा पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर देना अनिवार्य है, जबकि आवेदक को नजूल अधिकारी ने बचाव प्रस्तुत करने एवं सुनवाई का अवसर नहीं दिया है जिसके कारण नजूल अधिकारी छतरपुर द्वारा प्रकरण क्रमांक 4 अ-20 (1)/2011-12 एवं क्रमांक 103/नजूल/2012 में पारित आदेश दिनांक 16-5-12 नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप होना नहीं पाया गया है।

4/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर नजूल अधिकारी छतरपुर द्वारा प्रकरण क्रमांक 4 अ-20 (1)/2011-12 एवं क्रमांक 103/नजूल/2012 में पारित आदेश दिनांक 16-5-12 त्रुटिपूर्ण होने से निरस्त किया जाता है एवं निगरानी स्वीकार की जाती है।

f-2

  
सदस्य